स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सिकंदराबाद दर्पण

त्रैमासिक ई-पत्रिका (जून-2025 – अगस्त-2025) अंक-V

राजभाषा विभाग ★★★ सिकंदराबाद मंडल

संरक्षक

श्री आर.गोपाल कृष्णन,
मंडल रेल प्रबंधक
एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सहयोग

श्री प्रणय कुमार सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक

संपादकीय संपर्क

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
सिकंदराबाद, (द.म.रे),
500003
दूरभाष: 88112
ई.मेल:srascrsc@gmail.com

मंडल रेल प्रबंधक का संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि सिकंदराबाद मंडल का राजभाषा विभाग हिंदी में नियमित रूप से **"सिकंदराबाद दर्पण" त्रैमासिक ई-पत्रिका** का विमोचन कर रहा है.

यह पत्रिका राजभाषा के अलावा मंडल पर विभिन्न विभागों की सारगर्भित गतिविधियों की सूचनाओं का माध्यम है. इस पत्रिका को सुसज्जित करने वाले सभी रचनाकारों को भी मैं हार्दिक बधाई देता हूं जिन्होनें अपने रेल सेवा के व्यस्त कार्यों से समय निकालकर हिंदी में मौलिक रचनाओं का सृजन किया.

आशा है कि हमारी इस पहल को आप सभी प्रबुद्ध जनों द्वारा स्वीकार्यता प्राप्त होगी, जिससे भविष्य के हमारे प्रयासों को मनोबल मिलेगा.

मैं इस पत्रिका की सफल प्रकाशन की कामना करता हूं.

शुभकामनाओं सहित,

(श्री आर गोपाल कृष्णन)
मंडल रेल प्रबंधक

संपादकीय

संपादक के कलम से ....

प्रिय रेलकर्मियों,

सिकंदराबाद मंडल द्वारा प्रकाशित "सिकंदराबाद दर्पण" ई-पत्रिका का 5 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत खुशी हो रही है. हमारा सदैव प्रयास है कि "सिकंदराबाद दर्पण" का प्रत्येक अंक सुधी पाठकों की अपेक्षा व आकांक्षाओं पर खरा उतरे.

हिंदी भाषा केवल संवाद का साधन नहीं वरन यह हमारी साहित्य, कला, संस्कृति आदि के क्षेत्र में निरंतर रचनशीलता, गतिशील समाज, संस्थाओं एवं संगठनों का सूचक है. इस विभागीय राजभाषा पत्रिका को प्रकाशित करने का उद्देश्य रेलवे में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों के बीच लेखन प्रतिभा को उजागर करना है. जिससे राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान कर रेल कार्यालयों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग किया जा सके.

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन व अनुपालन प्रभावी रूप से हो, इसका एक मात्र उपाय है कि रेल कर्मियों के हृदय में राजभाषा के प्रति लगाव, निष्ठा और प्रेम का भाव जाग्रत किया जाए ताकि स्वभाविक रूप से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सकें. राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य राजभाषा विभाग के प्रमुख दायित्यों में से एक है. इसका मुख्य उद्देश्य संघ की राजभाषा नीतियों के अनुरूप सरकारी कामकाज हिंदी में करना तथा गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना है.

इस अंक में हमने विभिन्न विषयों पर रोचक लेख, कहानी तथा कविताओं को संकलित कर विशेष रूप से समावेश किया है. साथ ही इसमें राजभाषा के अतिरिक्त सिकंदराबाद मंडल की विभिन्न गतिविधियों की झलकियों को प्रकाशित किया गया है. इससे रेलकर्मियों एवं पाठकों का मनोबल बढेगा एवं पत्रिका को बेहतर बनाने में हमें मदद मिलेगी.

हम अपने रचनाकारों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और आशा करते हैं हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा.

शुभकामनाओं सहित,

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद

अनुक्रमणिका

क्र.सं	शीर्षक	लेखक / कवि	पृष्ठ
1	हिंदी के वैश्विक विस्तार में सोशल मीडिया की भूमिका	श्री एम.के.नागराजु, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी सिकंदराबाद	1
2	विश्वस्तरीय भाषा के रूप में अग्रसर: हिंदी	श्री प्रणय कुमार सिंह कनिष्ठ अनुवादक/ सिकंदराबाद	6
3	माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी	सी.एच सूर्यनारायण आरएस-II/वमंवाप्र/का/सिकं.	11
4	भारत होने का गर्व	जितेन्द्र कुमार, तक -1 वसेइंजी/विद्युत/अनुहैदराबाद/	12
5	एक संघर्ष जीवन	श्री प्रणय कुमार सिंह कनिष्ठ अनुवादक/ सिकंदराबाद	13
6	यारों के यार में स्त्री की आर्थिक अस्मिता	दीप नारायण चौहान कनिष्ठ अनुवादक/सिकंदराबाद	14
6	“एक पेड़ माँ के नाम”	वी.निर्मला वाणिज्य पर्यवेक्षक/वमंवाप्र/का/सिकं.	15
7	जीवन का आशय	अजय कुमार पाण्डेय वरि.यात्री गाड़ी प्रबंधक/सिकंदराबाद	16
8	अलविदा-आरजु	दुष्यंद्रजीत टीएम-III / रेलपथ/ सिरपुरकागजनगर	17
9	एक सच्ची कहानी	मुकेश कुमार बैरवा तक-I/डीजल लोको शेड/काजीपेट	18
10	पथ ए मंजिल	लक्ष्मण कुमार तक -1 /वसेइंजी/सवमाडि/बीदर	20
11	सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां		21
12	राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां		25

****

हिंदी के वैश्विक विस्तार में सोशल मीडिया की भूमिका

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद

हिंदी आज एक ऐसी भाषा है, जो दुनिया में बड़े स्तर पर बोली व समझी जाती है. मीडिया ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. दुनियाभर में आज भारतीय फिल्में व टेलीविजन कार्यक्रम देखे जाते हैं. इससे भी दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है. सोशल मीडिया, इंटरनेट व मोबाइल के कारण आज युवा पीढ़ी इस भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है. हिंदी आज देशभर में आम बोलचाल की भाषा है. आज अधिकतर लोग हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं. आज यह भाषा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश को जोड़ने वाली भाषा है. हिंदी के विस्तार में मीडिया की अहम भूमिका है. हिंदी भाषा दुनियाभर में समझी-बोली जाती है. यह इस भाषा की ताकत को बताता है. भाषा लोगों को जोड़ने का काम करती है. और आपसी सौहार्द को बढ़ाती है. हिंदी पत्रकारिता में भाषायी चुनौतियाँ भी सामने रही हैं.

सोशल मीडिया ने सार्वजनिक अभिव्यक्ति और एक बड़े समुदाय तक निडर और बिना रोक-टोक तथा नियंत्रण के अपनी बात, अपनी सोच और अनुभव पहुंचाना संभव बनाकर करोड़ों लोगों को एक नई ताकत, छोटी-बड़ी बहसों में भागीदारी का नया स्वाद और हिम्मत दी है. इस नई ताकत ने सरकारों और शासकों को ज्यादा पारदर्शी, संवादमुखी और जवाबदेह बनाया है, जनता के मन और नब्ज को जानने का नया माध्यम दिया है. सोशल मीडिया की ताकत ने सरकारों को अपने फैसलों, नीतियों और व्यवहारों को बदलने पर भी मजबूर किया है, पर क्या इस मीडिया ने लोक-विमर्श को ज्यादा गंभीर, गहरा, व्यापक, उदार बनाया है? क्या जब करोड़ों लोग एक साथ इतना लिख बोल रहे हैं तो इन मंचों पर सार्वजनिक विमर्श की गुणवत्ता बढ़ी है, स्तर बेहतर हुआ है? इस पर दो टूक राय देना संभव नहीं, क्योंकि संसार में कुछ भी एकांगी, एक दिशात्मक नहीं होता.

कुछ समय पहले जब सोशल मीडिया का अवतार हुआ तब ज्यादातर लोग अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते थे, उस समय हिंदी भाषी लोग सोशल मीडिया का सहज उपयोग नहीं कर पाते थे. लेकिन अब बदलते परिदृश्य के साथ-साथ हिंदी भाषा ने सोशल मीडिया के मंच पर दस्तक देकर अपने अस्तित्व को और भी बुलंद तरीके से स्थापित किया है. आज सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग लोगों के लिए अलग पहचान दिलाने में आकर्षक साबित हुआ है. आज जहाँ फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सअप पर अंग्रेजी में लिखे गये पोस्ट या फिर कमेंट्स की भीड़ में हिंदी में लिखी गई पोस्ट या फिर कमेंट्स प्रयोगकर्ताओं को ज्यादा आकर्षित करती है. आज विभिन्न कम्पनियाँ हिंदी भाषा में अपना विज्ञापन तथा सूचनाओं का प्रचार-प्रसार करती हैं, क्योंकि उनका मानना है कि आज हिंदी भाषा का विस्तृत फलक है और अगर उन्हें भी अपनी सूचनाओं को बहुसंख्यक लोगों तक पहुँचाना है तो वही भाषा चुननी होगी, जिसके पाठक वर्ग अधिक हो तथा ग्राहक सहज और परिवारिकता महसूस करें. इसके लिए हिंदी से अच्छा विकल्प हो ही नहीं सकता. सोशल मीडिया में हिंदी भाषा को वर्चस्व का प्रमुख कारण यह है कि हिंदी भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम है. संबंधित पोस्ट के भावों

को समझने में असुविधा नहीं होती है. लिखी गई बात पाठक तक उसी भाव में पहुँचती है, जिस भाव से लिखा जाता है. सोशल मीडिया पर मौजूद हिंदी का ग्राफ दिन दो गुनी रात चौगुनी आसमान छू रहा है. यह हिंदी भाषा की सुगमता, सरलता और समृद्धता का ही प्रतीक है. वैश्विक पटल पर आज हिंदी सोशल मीडिया के मंच पर विराजमान है. सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा के विस्तार की गति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अप्रैल 2015 तक देश में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या 14.3 करोड़ थी, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ताओं की संख्या पिछले साल में 100 प्रतिशत तक बढ़कर ढाई करोड़ पहुँच गई, जबकि शहरी इलाकों में यह संख्या 53 प्रतिशत बढकर 11.8 करोड़ रही. सबसे अहम बात यह है कि न केवल उम्रदराज भारतीय, बल्कि अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले युवा वक्ता भी अब सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा में अपनी पहचान बना रहे हैं.

आज फेसबुक, ट्विटर ब्लाक, व्हाट्सअप एप्प या अन्य कोई नेटवर्किंग साइट्स सभी पर हिंदी भाषा का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है. हिंदी भाषा में चैट एप्प भी बहुत सक्रिय है. हिंदी ब्लॉगिंग पत्रकारिता के साथ ही रचनाकारों की रचनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच है. हिंदी में करीब 35 हजार ब्लॉगर हैं, जिनमें से 4 हजार के करीब नियमित ब्लॉग लेखक है. हिंदी भाषा ने टेक्नोलॉजी की वेबदुनिया में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है. मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी का पर्दापण वर्ष 2005 के बाद आरम्भ हुआ. गत 8 वर्षों में हिंदी भाषा का प्रयोग सोशल मीडिया पर करने वालों की संख्या में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि भारत के अतिरिक्त नेपाल, मारिशस, फिजी, यूगांडा, दक्षिण अफ्रीका, कैरेबियन देशों और कनाडा आदिदेशों में भी हिंदी भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है. इसके अलावा इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, मध्य एशिया में भी इसे बोलने-समझने वाले पाठक हैं. वैश्वीकरण के दौर में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण पिछले कुछ समय से हिंदी के प्रति विश्व के लोगों की रूचि बढी है. यह अहम तथ्य है कि किसी भी मीडिया की लोकप्रियता उसके पाठकों की संख्या पर निर्भर करती है. इससे स्पष्ट होता है की सोशल मीडिया के वैश्विक मानचित्र पर हिंदी भाषा का ग्राफ निरंतर प्रगतिशील है और रहेगा.

सोशल मीडिया पर हिंदी का चलन बढ़ता जा रहा है. गूगल जैसी कंपनियां भी हिंदी भाषियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रही हैं. ट्विटर के अनुसार वर्ष 2011 में युजर्स की संख्या 10 करोड़ पहुँच जाने पर कंपनी ने अपनी वेबसाइट्स पर हिंदी इनपुट की व्यवस्था की थी. हिंदी बाजारवाद के कारण आगे बढी है. पहले सिनेमा, फिर टीवी और अब इन्टरनेट ने हिंदी के अथाह बाजार के कारण उसे पैसा कामाऊ भाषा तो बना ही दिया है. हिंदी सिनेमा के बाद अब हिंदी के टीवी चैनल, अखबार, इन्टरनेट कम्पनियाँ भी विज्ञापनों के जरिये अरबों रुपये सालाना कमा रहे हैं. अब मोबाइल पर इन्टरनेट के लगातार प्रसार के कारण हिंदी और भी मजबूत होगी, क्योंकि जो भी विशाल हिंदी भाषी बाजार से पैसा कमाना चाहेगा, उसे हिंदी सोशल मीडिया

को अपनाना ही पडेगा. दरअसल सोशल मीडिया और पांरपरिक कथा संसार के बीच एक अटूट रिश्ता भी है. माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश के लिए एक नारा दिया- 'डिजिटल इंडिया' का. आज सोशल मीडिया के माध्यम से कम समय में दुनिया की हर जानकारी को आम लोगों तक पहुँचाया जा रहा है. माननीय प्रधानमंत्री जी का अमेरिका में दिया गया भाषण बहुत प्रख्यात और चर्चित रहा. जिसमें उन्होंने कहा था कि 'दुनिया हमें साँप सपेरों के देश के तौर पर जानती थी, पर आज दुनिया को यह एहसास हो गया है कि साँप सपेरों वाले लोग अभी अँगुलियों से माउस चलाते हैं.' एक पहेली थी कि ट्विटर केवल अंग्रेजी पढे-लिखे लोगों के लिए है जो अधिकांश भारत के शहरों में रहते हैं. हिंदी भाषा में यूट्यूब पर भी कहानियों/कविताओं के कई ऑडियो-वीडियो डाउनलोड़ किये गए हैं और प्रतिदिन नये अपलोड़ हो रहे हैं. जिन्हें सुनने- देखने वाले पाठकों की निरंतर वृद्धि हो रही है. निस्संदेह यह कह जा सकता है कि सोशल मीडिया आज हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में, जहां भारतीय भाषाओं के प्रयोग की पूर्ण उपेक्षा की जाती थी, अब हिंदी सम्मानजनक स्थान प्राप्त करती जा रही है. रेडियो, टी.वी. तथा पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी में विज्ञापन देने की होड़ लगी रहती है. इन तथ्यों को देखते हुए कहा जा सकता है कि, हिंदी को देशव्यापी स्वीकार्यता मिल चुकी है और वह समय दूर नहीं, जब हिंदी पूर्ण रूप से भारत की एकमात्र संपर्क भाषा बन जाएगी.

हम सब जानते हैं कि भारत की संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी के विकास की प्रक्रिया संविधान बनने के बहुत पहले स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही शुरू हो चुकी थी. सच तो यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पहल हिंदीभाषी नेताओं ने नहीं, बल्कि महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, राजगोपालाचारी और सुभाषचन्द्र बोस सरीखे गैर-हिंदी भाषी लोगों की ओर से की गई. महात्मा गांधी देशभर में अपने भाषण हिंदी या हिंदुस्तानी में ही दिया करते थे. सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की तो विभिन्न राज्यों के सैनिकों को जोड़ने का काम हिंदी के माध्यम से ही किया. गांधीजी ने आजादी से पहले ही विभिन्न अहिंदी भाषी राज्यों, विशेषकर दक्षिण भारत में हिंदी प्रचारिणी सभाएं बनाईं. इन सभाओं के माध्यम से हजारों हिंदी सेवी तैयार हुए, जो देशभक्ति की भावना से हिंदी का प्रचार-प्रसार और शिक्षण करते थे, किंतु आज के संदर्भमें देखें तो हिंदी के प्रचार-प्रसार में सबसे अधिक योगदान मीडिया यानी पत्र-पत्रिकाएं और रेडियो-टेलीविजन का रहा है.

एक समय था जब पढ़-लिखे होने का मतलब था अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना. इसलिए, आजादी के समय बड़े या तथाकथित राष्ट्रीय समाचार पत्र अंग्रेजी में ही छपते थे, किंतु शिक्षा और साक्षरता के प्रसार की दिशा में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप यह अवधारणा बदलने लगी तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अखबार पढ़ने वाले लोगों की संख्या में इजाफा होने लगा. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्वस्वीकार्य बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही है. आकाशवाणी ने समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकारों, संगीत, मनोरंजन आदि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिंदी को देश के

कोने-कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है. इसमें हिंदी फिल्मों और गीतों का विशेष स्थान रहा है. हिंदी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता भारत की सीमाओं को पार कर रुस, चीन और यूरोप तक जा पहुंची. आकाशवाणी की विविध भारती सेवा तथा अन्य कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रसारित फिल्मी गानों में हिंदी को देशभर के लोगों की जुबान पर ला दिया. हिंदी को देशव्यापी मान्यता दिलाने में फिल्मों की भी महती भूमिका रही है, किंतु फिल्मों से अधिक लोकप्रिय उनके गीत रहे हैं जिन्हें जन-जन तक पहुंचाने का काम आकाशवाणी ने किया. अब वही काम निजी रेडियो चैनल कर रहे हैं. चैनल हल्के-फुल्के कार्यक्रमों, वाद-संवाद और हास्य-प्रहसन के जरिये हिंदी का प्रसार कर रहे हैं. इस समय आकाशवाणी के अधिकतर चैनल हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करते हैं. रेडियो प्रसारण में हिंदी के महत्व को इसी प्रकरण से समझा जा सकता है कि जब मुंबई में निजी रेडियो स्टेशनों के लाइसेंस दिए गए तो पहले आधे स्टेशन अंग्रेजी प्रसारण के लिए निर्धारित थे, किंतु कुछ ही महीनों में वे भी हिंदी में प्रसारण करने लगे क्योंकि अंग्रजी श्रोता बहुत कम थे. मनोरंजन के अलावा आकाशवाणी के समाचार, खेल कार्यक्रम, प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल तथा किसानों, मजदूरों और बाल व महिला कार्यक्रमों ने हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने में बहुत बड़ा योग दिया है और आज भी दे रहे हैं. मीडिया का सबसे मुखर, प्रभावशाली और आकर्षक माध्यम टेलीविजन माना जाता है. रेडियो की तरह टेलीविजन ने भी मनोरंजन कार्यक्रमों में फिल्मों का भरपूर उपयोग किया और फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा फिल्मों गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के सिलसिले को आगे बढ़ाया. टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिकों ने दर्शकों में अपना विशेष स्थान बना लिया. सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर-घर में देखे जाने लगे. रामायण, महाभारत हम लोग, भारत एक खोज जैसे धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने, बल्कि राष्ट्रीय एकता के सूत्र बन गए. देखते-ही- देखते टी.वी. कार्यक्रमों के जुड़े लोग फिल्मी सितारों की तरह चर्चित और विख्यात हो गए. समूचे देश में टेलीविजन कार्यक्रमों की लोकप्रियता की बदौलत देश के अहिंदी भाषी लोग हिंदी समझने और बोलने लगे.

हिंदी समाचार भी सबसे अधिक दर्शकों द्वारा देखे-सुने जाते हैं. हालांकि, इन दिनों हिंदी समाचार चैनल, समाचारों के स्तरीय प्रसारण की बजाय अविश्वसनीय और सनसनीखेज खबरें प्रसारित करने के लिए आलोचना झेल रहे हैं, पर फिर भी टीआरपी के मामले में वे अंग्रेजी चैनलों से कहीं आगे हैं. इन आलोचनाओं के बावजूद हिंदी चैनलों की संख्या लागातार बढ़ती जा रही है. जून 2009 में 22 नये चैनलों को प्रसारण की अनुमति मिली, जिनमें से अधिकांश चैनल हिंदी के हैं और लगभग सभी ने खबरे प्रसारित करने की अनुमति मांगी है. इस संदर्भ में यह जानना दिलचस्प होगा कि स्टार, सोनी और जी जैसे विदेशों से अपलिंक होने वाले चैनलों ने जब भारत में प्रसारण प्रारंभ किया तो उनकी योजना अंग्रेजी कार्यक्रम प्रसारित करने की थी, किंतु बहुत जल्दी उन्होंने महसूस किया कि वे हिंदी कार्यक्रमों के जरिये ही इस देश में टिक सकते हैं और वे हिंदी चैनलों में परिवर्तित होते गए.

जब इंटरनेट ने भारत में पांव पसारने शुरू किए तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कम्प्यूटर के कारण देश में फिर से अंग्रेजी का बोलबाला हो जाएगा, किंतु यह धारणा निर्मूल साबित हुई है. आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग न केवल धड़ल्ले से चले रहे हैं, बल्कि देश के साथ-साथ विदेशों के लोग भी इन पर सूचनाओं का आदान-

प्रदान तथा बातचीत कर रहे हैं. इस प्रकार इंटरनेट भी हिंदी के प्रसार में सहायक होने लगा है. अक्सर कहा जाता है कि मीडिया में इस्तेमाल होने वाली भाषा हिंदी नहीं 'इंग्लिश' है. इसी तर्क के आधार पर देखा जाए तो आज अंग्रेजी में भी हिंदी का १ खूब समावेश हो चुका है. अंग्रेजी मीडिया और विज्ञापनों में हिंदी मुहावरों, शब्दों और उक्तियों का खुलकर प्रयोग होता है. हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए उसमें स्वच्छंदता लाना आवश्यक है. यह ऐतिहासिक सत्य है कि जब भी कोई भाषा पुराने तटबंधों को तोड़कर नये क्षेत्र में प्रवेश करती है तो शुद्धतावादी तत्व उससे चिंतित हो जाते हैं. सच तो यह है कि हिंदी इस समय स्वीकार्यता के राजमार्ग पर सरपट दौड़ रही है और हिंदी अश्वमेध के घोड़ों को रोक पाना किसी के बस में नहीं है. मीडिया इस दौड़ को और गतिशील बना रहा है. आज का सच यह है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की जरूरत है, उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी की आवश्यकता है.

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि सकते है कि सोशल मिडिया के कारण ही हिंदी भाषा का वैश्विक रूप रूप से विस्तार हुआ है, नए शब्दों का निर्माण हुआ है और लोगों को अपनी भाषा में अभिव्यक्ति का अवसर मिला है.

****

विश्वस्तरीय भाषा के रूप में अग्रसर: हिंदी

प्रणय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल

प्राचीन काल से हमारी भारतीय भाषा, कला-संस्कृति और परंपराएं अन्य देशों से समृद्ध रही है. भारतीय संस्कृति की धारणा हमेशा 'वसुधैव कुटुंबकम' की रही हैं. इसमें संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानकर सभी के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव दिखाया गया है. इसी प्रयास में किसी देश के लोगों की भाषा, संस्कृति का समन्वय आदि का एक अहम योगदान रहता है. यही तत्व लोगों को एकत्रित करते हुए उन्हें जोड़ने का काम करते हैं. इस क्रिया में भाषा की सर्वश्रेष्ठ भूमिका रही है. क्योंकि भाषा हमेशा से समन्वय करने का एक प्रमुख व सार्थक माध्यम रहा है. हिंदी के महत्व के संदर्भ में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है:-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।

प्रत्येक देश की अपनी एक मूल भाषा होती है जिसे उस देश के अधिकतर लोग अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाते हैं, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं. राष्ट्रभाषा किसी देश की शान और पहचान होती है. हमारे देश में वहीं भूमिका हिंदी भाषा निभा रही है, परंतु दुःख की बात है कि हिंदी को आज तक राष्ट्रभाषा बनने का गौरव नहीं प्राप्त हो सका. भारत में हिंदी अनेक रूपों में प्रचलित हैं. यहाँ के अधिकांश लोग इसे मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा व कहीं कहीं तो लोग इसे राष्ट्रभाषा तक मानते हैं. इतना होने पर भी हिंदी आज अपने देश के सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व का प्रतिनिधित्व करते हुए संपूर्ण विश्व में फैलती जा रही है. देश-विदेश में इसे समझने व प्रयोग करने वालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है.

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी समझ चुके थे कि देश के विकास और उत्थान में हिंदी भाषा ही मुख्य भूमिका अदा कर सकती है. शायद इसीलिए उन्होंने देश की स्वाधीनता से तीन दशक पहले ही हिंदी के उत्थान के लिए काम करना शुरू कर दिया था. उनका कहना था 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा हैं, हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता, हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है. परंतु स्वाधीनता के 75 वें साल बाद भी हिंदी प्रेमियों, भारतवर्ष के अनेक स्वतंत्र सेनानी जो हिंदी को आजीवन राष्ट्रभाषा बनाने का सपना देखते रहे उनके सपने आज भी पूरे नहीं हुए. भारत में हिंदी को अपने ही लोगों द्वारा किस तरह अनदेखा किया गया तथा सभी भारतीयों आंखों में धूल झोंककर कैसे सिर्फ इसे राजभाषा बनाकर छोड़ दिया गया. इसके विपरीत हिंदी अपनी सरलता व सरसता से किस प्रकार आज विश्व के कोने-कोने में पहुंचकर विश्व भाषा बनने की कगार पर खड़ी है.

हिंदी भाषा की ऐतिहासिक व स्वरूपः

भारत में हिंदी भाषा का इतिहास लगभग हजार वर्ष पुराना है. संस्कृत भाषा से जन्मी हिंदी में आज लगभग अधिकतर शब्द संस्कृत की ही देन हैं. इससे यह प्रमाणित होता है कि हिंदी संस्कृत की वास्तविक उत्तराधिकारिणी भाषा है. संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से सफर कर हिंदी आज आधुनिक आर्यभाषा की

मर्यादा को प्राप्त कर चुकी है. अनेक भाषाविदों के अनुसार 'हिंदी शब्द 'सिंधु' से बना हैं, प्रारंभ में सिंध नदी के आसपास रहने वाले को सिंधु कहा जाता था और इनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को 'सिंधी लेकिन यही शब्द विदेशी ईरानियों के जुबान पर आकर पहले 'हिंदू' और बाद में 'हिंदी में परिवर्तित हो गया क्योंकि वे 'स' का उच्चारण 'ह' और 'ध' का उच्चारण 'द' के तौर पर करते थे. उसी हिंदी भाषा की आज कई उपभाषाएं वह बोलियां विकसित हो चुकी हैं. जिसमें मुख्यत पुर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी हिंदी, राजस्थानी हिंदी और पहाड़ी हिंदी आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त इन उपभाषाओं की अनेक बोलियां भी आज प्रचलित हैं. मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए हमेशा से भाषा को एक श्रेष्ठ माध्यम मानता आया है. भाषा बोलने व समझने की क्रिया ही मनुष्य को पशुओं से अलग करती है. इसलिए मानव के जीवन में भाषा की आवश्यकता कल्पनातीत है. भारतवर्ष की प्रधान भाषा है हिंदी. लगभग 68% भारतीय हिंदी भाषा बोलने व समझने में आज सक्षम हैं. इसलिए आज भारत का प्रत्येक बच्चा अपनी प्रांतीय भाषाओं के अतिरिक्त, बचपन से ही हिंदी भाषा को सीखने व समझने का एक उपयोगी माहौल पाता है. जिससे इसे अपनी दूसरी मातृभाषा के रूप में स्वीकार करने में उन्हें कोई समस्या नहीं आती है.

राजभाषा के रूप में 'हिंदी':

किसी भाषा की शक्ति का अंदाजा उस भाषा के प्रयोगकर्ताओं की संख्या से लगाया जा सकता है. किसी भाषा को समृद्ध उसके प्रयोग करने वाले ही करते हैं. हमारे देश में अनेक भाषाएँ प्रचलित होने पर भी हिंदी भाषा को जितना प्यार और दुलार मिला है, वह महत्वपूर्ण है. आज भारत के लगभग 60% लोग इस भाषा को दैनिक क्रियाकलापों में व्यवहार करते हैं. इनमें लगभग 49% लोगों की हिंदी मुख्य भाषा है. इससे हिंदी की लोकप्रियता एवं इसकी शक्ति व प्रयोजन को भली-भाँति समझा जा सकता है.

हिंदी विश्व परिदृश्य में:

एक तरफ जहां आजादी के बाद भारतवर्ष में राजनेताओं ने हिंदी को हेय दृष्टि से देखना शुरू किया वहीं दूसरी ओर अपनी सरलता व सरसता के कारण हिंदी धीरे-धीरे फैलती चली गई। 2011 की जनगणना के मुताबिक देश में 43.63 प्रति शत आबादी की पहली भाषा हिंदी है. यह आंकड़ा करीब 11 साल पहले का है। तब देश में 125 करोड़ लोगों में से 53 करोड़ लोग अपनी मातृ भाषा हिंदी ही मानते थे.' भारत हमेशा से अपने ज्ञान, भाषा, कला संस्कृति आदि के लिए सभी देशों में आकर्षण का केंद्र रहा. यह देश प्राचीन काल से अनेक विद्वानों का गढ़ रहा है. इस देश ने प्राचीन काल से ही अपनी ज्ञान, आयुर्वेद व योग के आधार पर विदेशी विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर खींचा है. आज वैश्वीकरण का युग है. इस युग में कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह बहुत आसानी से भेजी जा सकती हैं. आज हमारे युवा उच्च शिक्षा व नौकरी के लिए विदेशों में अधिक मात्रा में गमन करने लगे हैं. हालाकि बिना विद्वता के यह काम कतई आसान नहीं है, परंतु उनकी विद्वता में उनके भाषा द्वारा प्राप्त ज्ञान का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा. संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार आज संसार में भाषाओं और बोलियों की संख्या लगभग 6800 से अधिक है. इनमें कुछ प्रमुख भाषाएं लगभग संसार की आधी या उससे भी अधिक जनसंख्या बोलती हैं. इनमें तीसरा स्थान हमारी राजभाषा हिंदी का भी है. संयुक्त राष्ट्र संघ के 193 सदस्य राष्ट्रों में भारत भी शामिल है. अंतर्राष्ट्रीय संगठन होने के कारण इसके द्वारा दिए गए दिशा निर्देश सभी

देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं. इस संगठन की कामकाजी भाषाओं में अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी और स्पेनीश आदि प्रमुख हैं। यह वह भाषाएँ हैं जिन्हें विश्व भाषा का गौरव प्राप्त है. संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिंदी भाषा के प्रति भी हमेशा अपनी सहानुभूति व्यक्त की है. संगठन के अधिकांश सदस्यों का हमेशा से यह मानना रहा हैं कि हिंदी में विश्व भाषा बनने का सम्पूर्ण सामर्थ्य व्याप्त है. उनका मानना है कि भारत सरकार अगर हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए खर्च उठाने को तैयार है तब हम हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रमुख भाषाओं में शामिल कर सकते हैं. इसकी पहल सर्वप्रथम 1977 में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने विदेश मंत्री तथा 2002 में प्रधानमंत्री के तौर पर यहाँ हिंदी में भाषण देकर की थी. इसी प्रयास से 2018 के अगस्त में संयुक्त राष्ट्र ने हिंदी भाषा के एक साप्ताहिक समाचार बुलेटिन की शुरुआत की है. इसके बाद से संयुक्त राष्ट्र अपने सभी कार्यक्रमों का अपने रेडियो व वेबसाईट पर हिंदी भाषा में प्रसारण करता आया है. भारत के प्रतिनिधि राजदूत टी. एस. तिरुमूर्ति ने बताया कि 'इस साल पहली बार इस संगठन के प्रस्ताव में हिंदी भाषा को भी शामिल किया गया है. जिसमें बांग्ला और उर्दू का भी जिक्र है. हम इन बदलाव का स्वागत करते हैं। उन्होंने कहाः-"भारत 2018 से संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग (DGC) के साथ साझेदारी कर रहा है. संयुक्त राष्ट्र के समाचार और मल्टीमीडिया कंटेंट को हिंदी भाषा में प्रसारित करने और मुख्य बनाने के लिए फंड़ भी दे रहा है."

<u>विश्व हिंदी सम्मेलनः</u>

यह सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है. यहाँ विश्व के कोने कोने से हिंदी विद्वान, भाषा विज्ञानी, पत्रकार, साहित्यकार, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी इकट्ठा होते हैं. इस सम्मेलन का प्रमुख उदेश्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरुकता पैदा करते हुए, पाठकों ने हिंदी साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना तथा जीवन की विविध परिस्थितियों में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहन देना और साथ ही साथ हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों में भावुकतापूर्ण रिश्ता कायम करने के उद्देश्य से 1975 में यह विश्व हिंदी सम्मेलन की श्रृंखला आरम्भ की गयी. इसकी पहल तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने की थी.

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में सम्पन्न हुआ जिसमें स्वतन्त्रता सेनानी विनोबा भावे ने अपना सन्देश दिया था. पहले इसका आयोजन हर चौथे वर्ष में होता था, लेकिन अब 3 वर्ष के अंतराल में होता है. अब तक इसके 11 सम्मेलन हो चुके हैं- मॉरीशस, नई दिल्ली, पुनः मॉरीशस, त्रिनिडाड़ व टोबेगो, लन्दन, सूरीनाम न्यूयार्क और जोहांसबर्ग, भोपाल, मॉरीशस में संपन्न हो चुका हैं.

<u>विश्व हिंदी दिवसः</u>

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए 2006 में प्रति वर्ष 10 जनवरी को हिंदी दिवस मनाने की घोषणा की थी. यह विश्व हिंदी दिवस दुनियाभर के सभी भारतीय दूतावास एक त्यौहार की तरह मनाते हैं. विश्व हिंदी दिवस नॉर्वे में भारतीय दूतावास ने मनाया और बाद में दूसरा व तीसरा विश्व हिंदी दिवस भारतीय नॉर्वे की सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के तत्वाधान में सुरेश चन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में मनाया गया.

1. आज विश्व में करीब 70 करोड़ हिंदी भाषी लोग हैं। यह विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है. वर्तमान मॉरीशस में लगभग 6,85, 170, सिंगापुर में 5,000, दक्षिण अफ्रीका में

8,90,292, अमेरिका में 8,63,077, युगांडा में 1,47,000, यमन में 2,32,760, नेपाल में 8 लाख और जर्मनी में

30,000 लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं. न्यूजीलैंड में आज हिंदी सर्वाधिक बोली जाने वाली चौथी भाषा बनी है.

2. आज लगभग 175 से भी अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का ज्ञान दिया जा रहा है। साथ ही साथ ज्ञान-विज्ञान, कला संस्कृति की अनेक पुस्तकें भी अब बड़े पैमाने में हिंदी में अनुवाद की जा रही है.
3. आज इंटरनेट पर हिंदी की मांग बढ़ी है. अनेक वेबसाइट सोशल मीडिया आदि में हिंदी का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है.
4. आज हिंदी जानने, समझने तथा बोलने वालों की संख्या में काफी तेजी आयी हैं जिसके कारण आज विश्व भर की प्राय सभी वेबसाइटों पर हिंदी को लेकर एक रूचि पैदा हुई हैं. आज इसलिए इंटरनेट, ईमेल, ईकॉमर्स, ईबुक एवं वेबसाइटों पर हिंदी बड़ी सहजता से उपलब्ध है. यहाँ तक की गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, इंटेल, ऑपेल, आइबीएम जैसी कंपनियां भी अपने व्यापक बाजार के विज्ञापन के लिए आज हिंदी का सहारा लेते हुए साफ साफ देखे जा सकते हैं.
5. विश्व आर्थिक मंच ने 2016 दिसम्बर में विश्व की 10 सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की एक सूची जारी की जिसमें हिंदी को भी जगह दी गई थी. दूसरी ओर 'कोर लैंग्वेजेज' एक अन्तर्राष्ट्रीय साइट ने 'दस सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषाओं में हिंदी को स्थान दिया था'.

<u>हिंदी भाषा की उपयोगिताः</u>

आज हिंदी का महत्व हमारे देश के साथ साथ संपूर्ण विश्व में बढ़ा है. हिंदी का प्रयोग आज विविध प्रकार के ज्ञान, व्यापार, तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी के अनेक क्षेत्रों में भरपूर हो रहा है. अब भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा हिंदी में देने तक पहल हो चुकी है. जीविका के लिए आज हिंदी भाषा का क्षेत्र विस्तृत नजर आता है। कला के विविध क्षेत्रों में जैसे शिक्षक व प्रोफेसर बनना, पुस्तक लिखना, अनुवाद करना, प्रूफ रीडिंग करना, स्क्रीप्ट लिखना, संवाद लिखना, कांटेंट बनाना साथ ही साथ हिंदी में डबिंग करना आदि जैसे अनेक काम आज हम हिंदी भाषा के माध्यम से कर सकते हैं. सच कहें तो हिंदी ने हमारे लिए आज रोजगार के जितने रास्ते खोले हैं वह कोई अन्य विषय नहीं खोल सकता. वर्तमान समय में हिंदी भाषा न केवल बोलचाल की भाषा तक ही सीमित है बल्कि यह आज संपूर्ण भारत की पहचान बन चुकी है. यह भाषा आज हमारी कला संस्कृति एवं संस्कारों व सभ्यता की सच्ची संवाहक, संप्रेषण है. यह वह भाषा है जो हमारे प्राचीन परंपरागत ज्ञान व सभ्यता के साथ आधुनिक विज्ञान व प्रयुक्ति के बीच एक सेतु भी हैं। हिंदी भाषा हमेशा से भारतीय के लिए जन आंदोलन की भाषा रही. इस भाषा के माध्यम से ही राष्ट्रीय आंदोलन में सभी भारतवासी समीप आकर इकट्ठा हुए और विदेशी सत्ता से लडकर देश को आजादी दिलाने का काम किया। इसमें कोई संदेह नहीं

कि यह भाषा सभी को एकता के सूत्र में बांधने का काम करती है. इसी संदर्भ में हमारे गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर जी कहते हैं कि 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'."

निष्कर्ष:

हिंदी अपनी सरलता से सभी की प्रिय बनकर आज विश्व की एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है. यह भाषा बहुत ही सरल-सहज होने के साथ साथ विश्व की सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक भाषाओं में एक है। इसलिए इसे बोलने और समझने वालों की संख्या आज क्रमशः बढ़ती जा रही है. देश का प्रत्येक क्षेत्र जैसे ज्ञान विज्ञान, व्यापार, कला, संस्कृति, शिक्षा आदि सभी में आज हिंदी अपना अतुलनीय योगदान दे रही है. हमारे देश में एक कथन प्रसिद्ध हैं कि यहाँ 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी' अर्थात इस देश की गरिमा इतनी बड़ी हैं कि यहाँ चार कोस चलते ही लोगों के पीने का पानी अपना स्वरूप बदल लेता है और आठ कोस चलते ही उसकी बोली अपना लेते हैं. इसकी सरलता ही वह विशेषता है जो अन्य भाषा के लोगों को भी आसानी से अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है. इतना होने पर भी हिंदी आज भी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं बन पा रही. इसके लिए केवल हमारे नेताओं को हिंदी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुए अपने कर्तव्यों का निष्ठा के साथ पालन करना होगा. यह हिंदी भाषा के प्रति लोगों का स्नेह ही है जो इसे मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा व कहीं कहीं तो लोग इसे राष्ट्रभाषा तक मानते हैं.

हिंदी आज विश्व भाषा के रूप में परिचित हैं किन्तु दुख की बात यह है कि हमारे देश में हिंदी को अंग्रेजी भाषा के समक्ष तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है. हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए सरकार के साथ - साथ हम भारतवासियों को भी विशेष प्रयत्न करने पड़ेंगे. इसके लिए सबसे पहले हमें दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करने होंगे. छोटे छोटे प्रयास जैसे हिंदी का अध्ययन करना, लिखने का प्रयास करना, शुद्ध बोलने का प्रयास करना, हिंदी में हस्ताक्षर करना, कान्टेंट लिखना तथा अनुवाद करना आदि कार्यों से भी हम हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए खड़ा कर सकते हैं.

*****

माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी

सीएच.सूर्यनारायण
आरएस-II/वमंवाप्र/का/सिकंदराबाद

शांतचित्त और हसमुख नारी,
उत्तम गुणों से संपन्न संस्कारी।
लक्ष्मी के रूप में मंगल गौरी,
माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी।

हृदय में करुणामृत कलश धारी,
मेरे प्रति तेरी ममता है न्यारी।
तेरे बिना अधूरी है मेरी जिंदगी सारी,
माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी।

मेरी इच्छाओं को पूरी करने में,
कभी भी तू नहीं करती देरी।
कभी रोटी, कभी कचौरी खिलाती,
माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी।

ढेरों मिठाइयाँ बनाती तू प्यारी,
मेरे पसंद की हलुआ और पूरी।
गोद में लिटाकर सुनाती है लोरी,
माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी।

मेरी उन्नति में सदा तेरी भागीदारी,
तू ही है मेरी प्रेरणाकारी।
मेरे जीवन की पतंग की डोरी,
तेरे ही हाथों में है, माँ प्यारी।

तुझसे ही है मेरी खुशियाँ सारी,
तू है माँ सिर्फ और सिर्फ मेरी।
इस दुनिया में सबसे अनुपम, सबसे न्यारी,
माँ! तुझ पर ज़िंदगी भर हूँ आभारी।

*****

भारत होने का अर्थ

जितेन्द्र कुमार, तक -1
वसेइंजी/विद्युत/अनु/हैदराबाद

भारत!
ये शब्द हमारे खून के
एकएक कतरा में -
समाया हुआ है

हमारी मौत के
अंतिम समय ,मुझसे
पूछे जाएं
हमारे अंतिम शब्द
तो बेशक
वह शब्द होगा भारत
क्योंकि
इस महान शब्द का अर्थ
दुनियाँ के महानतम शब्दों की
डिक्शनरियों में सबसे उपर है

भारत होने का अर्थ
मिट्टी के घरों से
गिरती बारिश की बूंदें
और उस सूखी मिट्टी से
उठती सोंधी ख़ुशबू

भारत होने का अर्थ
सावन के महीने में
मिट्टी पानी से सने
कीचड़ में
हँसते, मुस्कुराते जुड़े बांध
कमर से झुकी
सुरीले गीतों का
तान छेड़ती महिलाएं
और
कंधों पर हल, कुदाल
तथा सर पर खाद, बीज की बोरियां ले
नंगे पांव
धरती को रौंदते पुरुष

भारत होने का अर्थ
जल, जंगल और जमीन को संजोते
ढोल, मजीरों की थाप पर
थिरकते आदिवासी
जो प्रकृति रक्षक हैं
प्रकृति पूजक है

भारत होने का अर्थ
धनधान्य से भरे खलिहानों से -
कुछ दानें उठाकर
ले जाती प्यारी गिलहरियाँ
और
मक्के, साँवे की बालियों को
टुंगकर आसमानों में उड़ते पंछियों के झुंड

भारत होने का अर्थ
शाम होते ही
गाँव के पूर्वी छोर पर जमा हो
गुल्लीडंडे -, अंटों का खेल
फिर बातबात पर -
झगड़ा, गालीगलौज -
परंतु
फिर अहले सुबह
एक साथ
पीठ पर
किताब के बस्ते ले
हँसतेहँसाते स्कूल तक जाना -

भारत होने का अर्थ
सुबहसुबह -
नर्म घासों पर टहलते, बतियाते
बुजुर्गों की टोलियाँ
और ठीक बायीं ओर
लेफ्टराइट परेड करते -
जवानों का काफिला
जो हर वक्त सीना ताने
देश के सरहदों पर
दुश्मन की हरेक चाल को
नाकाम करने की ताक में चौकन्ना

भारत होने का अर्थ
दिवाली पर एक दूसरे के घर
मिठाइयाँ बाँटते
नौजवानों का कारवाँ
वहीं ईद पर
सभी के गले मिल
ईदी का रिवाज
और
एक दूसरे के घर बैठ
निर्विकार भाव से
सेवइयां खाते बच्चों की टोलियाँ ।

एक संघर्ष जीवन

प्रणय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल

एक मुश्किल भरी जिंदगी का सफर है जीवन में.
हर जगह चुनोतियों और संघर्षो का प्रारंभ है जीवन में.
हर दिन नया-नया संघर्ष होगा इस जीवन में,
कहीं परछाई तो कभी कहीं नवपुष्प खिलेगा इस जीवन में.
कहीं बनेंगे संबंध अंतर्मन से तो,
कहीं आत्मीयता का आभाव मिलेगा.
हर नियमों नवाचारों को रखना है अपने इस मन में,
नहीं टूटना है इस जीवन के गठबंधन से,
चाहे अनबन क्यों न हो अपने सगे-संबंधों से.
कभी किसी का फटकार मिलेगा,
तो कहीं किसी का सत्कार मिलेगा.
नया सोंच है, नया जोस है अपने इस मन में,
चाहता हूँ एक नई उर्जा भर लूँ इस तन में.
मिलते है कई रोढे इस जीवन के हर पथ पर,
नहीं कभी आराम है इस जीवन के संघर्षों पर.
हर जगह नए-नए कर्तव्यों का अविर्भाव होगा,
तो कहीं कभी दुश्मनों का ललकार होगा.
तू चलाचल राही अपने कर्मपथ पे,
जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा.
रख स्वभाव में शुद्धता का स्पर्श तू,
अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा.

*****

'यारों के यार' उपन्यास में स्त्री की आर्थिक अस्मिता

दीप नारायण चौहान
कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद

कृष्णा सोबती का 'यारों के यार' एक चर्चित उपन्यास है. यह उपन्यास सरकारी दफ्तरों में काम करने वाले कर्मचारियों पर केंद्रित है. इस उपन्यास के प्रमुख पात्र भवानी बाबू जो एक हेड क्लर्क हैं तथा दो स्त्री पात्र तमाशा और तमन्ना है. अगर हम स्त्री की आर्थिक अस्मिता को केंद्र में रखकर इन दोनों पात्रों को देखें तो यह उपन्यास स्त्री की उस स्थिति का वर्णन करती है, जो घर से बाहर रहकर दफ्तर में काम करके अपना जीवन यापन करती हैं. आज समाज इन आधुनिक नारी को हेय दृष्टि से देखता है. उनकी छवि को निरंतर खराब करते रहता है. चाहे वह शिक्षित स्त्री हो या अभावग्रस्त स्त्री. ये स्त्रियाँ घर से बाहर अपना कदम बढ़ाती हैं और अपने परिवार का भरण पोषण करती है तो इसमें पुरुषवादी सत्ता के अंह को ठेस पहुंचता है. वह उन पर तरह-तरह के लांछन लगाते हैं. आज भी स्त्री पुरुष के मध्य सहज रूप में अपना स्थान कायम करने में विफल रही हैं . ऐसा नहीं कि घर से बाहर निकल कर दफ्तरों में नौकरी करके नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है. वह वहाँ पर भी शोषण मुक्त नहीं है. इसका साक्षात प्रमाण इस उपन्यास में तमन्ना और तमाशा है. ऐसा नहीं कि वो विरोध नहीं कर रहीं. पर पुरुषवादी व्यवस्था के कुछ महानुभाव इस कुकर्म में अग्रीण है, कुछ एक संस्थाओं को अगर छोड़ दें तो. इन सारी परिस्थितियों का सूत्र कहीं न कहीं अर्थ पर ही केंद्रित है. इस आर्थिक तंगी की वजह से ही तमाशा और तमन्ना अपने अस्मिता को ताख पर रख देती हैं क्योंकि उनका पहला प्राथमिकता पेट है . ऐसा नहीं कि दोनों पात्र आर्थिक रूप से बेहाल है.

तमाशा और तमन्ना दोनों उपन्यास के प्रमुख स्त्री पात्र हैं. उनके जीवन में पैसे की जरूरत तो है परंतु इतना नहीं कि वह अपने अस्मिता को किसी के हवाले कर दें . परन्तु हर कोई अपने जीवन में तरक्की पाना चाहता है. यह कोई बुरी बात नहीं है. इसी का शिकार तमाशा होती है. उसका जीवन तमाशा बनकर रह जाता है. इस उतार-चढ़ाव की जद्दोजहद में इस तरह डूबती चली जाती है कि फिर बाहर नहीं निकल पाती. इस आधुनिकता के भाग दौड़ में हर ख्वाहिशों को पूरा करना सबकी लालसा होती है. पर उसकी यह तलब उसे तबाह कर देती है. वह इस कदर शोषित होती है कि जिससे उसका बाहर निकल पाना असंभव सा प्रतीत होता है. वहीं इस उपन्यास का दूसरा पात्र तमन्ना है. उसे भी इसी प्रकार अपने अस्तित्व को तिलांजलि देना पड़ता है. उसे भी ये परिस्थितियां इसकदर अपने आगोश में ले लेती हैं कि वह भी इस जंजाल से निकल नहीं पाती. इस प्रकार सोबती जी ने आर्थिक समस्या के माध्यम से नारी को अपनी अस्मिता को खोती हुई दिखाई हैं. साथ ही अर्थ से उपजी चुनौतियाँ मनुष्य को किस प्रकार भ्रमित करती हैं, इसकी ओर भी संकेत करती हैं. जब तक प्रशासनिक व्यवस्था इसे अपने घर की महिलाओं की तरह नहीं देखेंगे या अपना दृष्टिकोण नहीं परिस्कृत करेंगे तब तक यह मसला हल नहीं होगा. एक मात्र आर्थिक आत्मनिर्भरता ही नारी को सबलता प्रदान कर सकती है. हमारे समाज में आज भी ऐसी अनेक महिलाएं है जो आधुनिकता की होड़ में अपनी अस्मिता से समझौता नहीं करती हैं. क्योंकि वह नौकरी अपने बल पर पायीं हैं इसीलिए वह किसी के हाथ की झुंझुना नहीं बनती हैं. परंतु आज भी कुछ कामकाजी स्त्रियाँ हैं जिनका शोषण शोषित वर्ग द्वारा निरंतर किया जा रहा है. अतः नारी शोषण आज समाज के सामने एक भीषण समस्या है. इसका उन्मूलन किये बिना नारी का उत्थान संभव नहीं. यही वजह है कि कृष्णा सोबती ने इस ओर भी अपनी कलम चलाई हैं.

*****

“एक पेड़ माँ के नाम”

वी.निर्मला
वाणिज्य पर्यवेक्षक/वमंवाप्र/का/सिकंदराबाद

माँ और पेड़ — दोनों जीवनदायी हैं। जैसे माँ अपने बच्चों को पालती है,, सहेजती है, वैसे ही पेड़ हमें जीवन देता है — हवा, छाया, फल और शांति। प्रिय माँ, यह पेड़ तुम्हारे नाम,। जैसे तुमने मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया, वैसे ही यह पेड़ भी अपने फल-फूलों से सबको पोषण देता है, जैसे तुमने मुझे सहारा दिया, वैसे ही यह पेड़ भी छाया प्रदान करता है। जैसे तुमने मुझे जीवन दिया, वैसे ही यह पेड़ भी जीवन देता है। यह पेड़ तुम्हारी ममता, तुम्हारा प्यार, तुम्हारी याद दिलाता है। मैं तुम्हारी याद में इसे हमेशा सहेज कर रखूँगा,। अगर किसी पौधे को माँ के नाम पर लगाया जाए, तो वह सिर्फ एक पौधा नहीं रह जाता, बल्कि पेड़ बनकर भावनाओं और स्मृतियों का प्रतीक बन जाता है।

एक पेड़ माँ के नाम पर लगाना, माँ के प्रति श्रद्धा और प्रेम की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति हो सकती है। माँ वह होती है जो बिना किसी स्वार्थ के हमें जीवन देती है, हमारी देखभाल करती है और हर परिस्थिति में हमारे साथ खड़ी रहती है। ठीक वैसे ही पेड़ भी बिना किसी चाह के हमें ऑक्सीजन देता है, फल देता है और पर्यावरण को संतुलित रखता है।

जब हम किसी विशेष दिन, जैसे माँ के जन्मदिन या मातृ दिवस पर, एक पौधा उनके नाम पर लगाते हैं, तो वह पेड़ के रूप में हमारी भावनाओं का जीवंत स्मारक बन, प्रेरणास्रोत का कार्य करता है। यह कार्य न केवल माँ के सम्मान का प्रतीक होता है, बल्कि प्रकृति की सेवा का भी प्रतीक होता है।

पौधे को रोज़ पानी देना, उसकी देखभाल करना, ऐसे लगता है जैसे हम माँ की सेवा कर रहे हों। वह पौधा बड़ा होता है, हरा-भरा होता है, तो उसमें माँ की ममता की झलक दिखती है।

एक पौधा माँ के नाम पर लगाना एक छोटा-सा काम लग सकता है, लेकिन उसका महत्व बहुत बड़ा होता है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है,, माँ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का एक अवसर प्रदान करता है और आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देता है कि माँ और प्रकृति — दोनों की सेवा मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

इसलिए आइए, हम सब मिलकर कम-से-कम एक पेड़ अपनी माँ के नाम पर जरूर लगाएं और उसे अपनी भावनाओं का प्रतीक बनाएं।

*****

जीवन का आशय

अजय कुमार पाण्डेय
वरि. यात्री गाड़ी प्रबंधक/सिकंदराबाद

बिना लड़े कब मिल पाया है जीवन का आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो।

लहरों की धारा संग चलकर गहराई का ज्ञान हुआ,
आत्म विभूषित हुआ जहां राहों का अनुमान हुआ ।
अनुमानों के बिना मिला कब संकल्पों को आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो ।

अरुणोदय का बोध नहीं तो चन्द्र रश्मियाँ व्यर्थ रहीं,
जब तक ताप नहीं मिलता है शीतलता का अर्थ नहीं ।
धूप-ताप जो सहा नहीं है छाँवों का आशय बोलो ,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो ।

उच्च कभी तो निम्न कभी है अपने जीवन की रेखा,
पौरुष का सम्मान किया जो उसने मरु में जल देखा ।
अनुदानों में मिलने वाले सपनों का आशय बोलो,
बिना बढ़े कब मिल पाया है जीवन में आश्रय बोलो ।

*****

अलविदा - आरज़ू

दुष्येंद्रजीत, टीएम-III /सिरपुरकागजनगर

अपने दिल की क्या बात लिखूं ,
गुज़री अपनी कुछ याद लिखूं ।
दस दिन कब दो दिन में गुजरे,
अनजानों से मुलाकात लिखूं।।

कोई बंधु मिला, कोई भाई मिला ,
न कोई गिला न कोई शिकवा ।
कब दर्द मेरे हमदर्द बने ,
हमदर्दों की सौगात लिखूं।

कुछ बोली से तकरार हुआ ,
अगले ही दिन फिर प्यार हुआ।
तकरार कहां , कहां प्यार हुआ ,
करने वाले का पता लिखूं।
दिन गुजरे वादी में पहुंचे ,
कल कल करते झरने बहते।
बहता पानी गाती हवा की
क्या सरगम क्या सुरताल लिखूं।।

वादी से ऊंचे वृक्ष घने ,
वृक्षों से मिलकर वन ये बने ।
वादी ऊंची या वन ऊंचे ,
किस फीते से मैं माप लिखूं।।

लिखने वाले ने खूब लिखा,
धरती से परे है स्वर्ग वहां।
उस स्वर्ग से सुंदर स्वर्ग यहां ,
लिखने वाले से कैसे कहूं।
नज़रों ने देखा जो अभी ,
दिल ने न सोचा था कभी ।
दोनों असमंजस में पड़े ,

नज़रों की सुनू या दिल की लिखूं।
आखिर वो दिन अब आ ही गया,
कुछ लम्हों में हम होंगे ज़ुदा।
बस यही आरजू है रब से
मिल जाएं फिर से मेरे ख़ुदा।।
अलविदा अलविदा अलविदा

****

एक सच्ची कहानी

मुकेश कुमार बैरवा
तकनीशिय/ डीजल लोको शेड/ काजीपेट

मैं एक दुकान में खरीददारी कर रहा था, तभी मैंने उस दुकान के कैशियर को एक ५-६ साल के लड़के से बात करते हुए देखा. कैशियर बोला: "माफ़ करना बेटा, लेकिन इस गुड़िया को खरीदने के लिए तुम्हारे पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं" फिर उस छोटे-से लड़के ने मेरी ओर मुड़ कर मुझसे पूछा "अंकल, क्या आपको भी यही लगता है कि मेरे पास पूरे पैसे नहीं हैं?" मैंने उसके पैसे गिने और उससे कहा: "हाँ बेटे, यह सच है कि तुम्हारे पास इस गुड़िया को खरीदने के लिए पूरे पैसे नहीं हैं" वह नन्हा-सा लड़का अभी भीअपने हाथों में गुड़िया थामे हुए खड़ा था. मुझसे रहा नहीं गया इसके बाद मैंने उसके पास जाकर उससे पूछा कि यह गुड़िया वह किसे देना चाहता है? इस पर उसने उत्तर दिया कि यह वो गुड़िया है - जो उसकी बहन को बहुत प्यारी है और वह इसे उसके जन्मदिन के लिए उपहार में देना चाहता है. "यह गुड़िया पहले मुझे मेरी मम्मी को देना है, जो कि बाद में जाकर मेरी बहन को दे देंगी" यह कहते-कहते उसकी आँखें नम हो आईं थीं.

"मेरी बहन भगवान के घर गयी है...और मेरे पापा कहते हैं कि मेरी मम्मी भी जल्दी-ही भगवान से मिलने जाने वाली हैं| तो मैंने सोचा कि क्यों ना वो इस गुड़िया को अपने साथ ले जाकर मेरी बहन को दे दें..." मेरा दिल धक्क-सा रह गया थ. उसने ये सारी बातें एक साँस में ही कह डालीं और फिर मेरी ओर देखकर बोला - "मैंने पापा से कह दिया है कि - मम्मी से कहना किवो अभी ना जाएँ| वो मेरा, दुकान से लौटने तक का इंतजार करें.

फिर उसने मुझे एक बहुत प्यारा-सा फोटो दिखाया, जिसमें वह खिलखिला कर हँस रहा था . इसके बाद उसने मुझसे कहा "मैं चाहता हूँ कि मेरी मम्मी, मेरा यह फोटो भी अपने साथ ले जायें, ताकि मेरी बहन मुझे भूल नहीं पाए. मैं अपनी मम्मी से बहुत प्यार करता हूँ और मुझे नहीं लगता कि वो मुझे ऐसे छोड़ने के लिए राजी होंगी, पर पापा कहते हैं कि उन्हें मेरी छोटी बहन के साथ रहने के लिए जाना ही पड़ेगा. इसके बाद फिर से उसने उस गुड़िया को ग़मगीन आँखों-से खामोशी-से देखा. मेरे हाथ जल्दी से अपने बटुए (पर्स) तक पहुँचे, और मैंने उससे कहा "चलो एक बार और गिनती करके देखते हैं कि तुम्हारे पास गुड़िया के लिए पर्याप्त पैसे हैं या नहीं?" उसने कहा: "ठीक है| पर मुझे लगता है मेरे पास पूरे पैसे हैं". इसके बाद मैंने उससे नजरें बचाकर कुछ पैसे उसमें जोड़ दिए, और फिर हमने उन्हें गिनना शुरू किया, ये पैसे उसकी गुड़िया के लिए काफी थे यही नहीं, कुछ पैसे अतिरिक्त बच भी गए थे .

नन्हे-से लड़के ने कहा: "भगवान् का लाख-लाख शुक्र है - मुझे इतने सारे पैसे देने के लिए!" फिर उसने मेरी ओर देखकर कहा कि "मैंने कल रात सोने से पहले भगवान् से प्रार्थनाकी थी कि मुझे इस गुड़िया को खरीदने के लिए पैसे दे देना ताकि मम्मी इसे मेरी बहन को दे सकें और भगवान् ने मेरी बात सुन ली इसके अलावा मुझे

मम्मी के लिए एक सफ़ेद गुलाब खरीदने के लिए भी पैसे चाहिए थे, पर मैं भगवान् से इतने ज्यादा पैसे मांगने की हिम्मत नहीं कर पाया था पर भगवान् ने तो मुझे इतने पैसे दे दिए हैं कि अब मैं गुड़िया के साथ-साथ एक सफ़ेद गुलाब भी खरीद सकता हूँ ! मेरी मम्मी को सफेद गुलाब बहुत पसंद हैं फिर हम वहां से निकल गए . मैं अपने दिमाग

से उस छोटे-से लड़के को निकाल नहीं पा रहा था फिर, मुझे दो दिन पहले स्थानीय समाचार पत्र में छपी एक घटना याद आ गयी, जिसमें एक शराबी ट्रक ड्राईवर के बारे में लिखा था जिसने नशे की हालत में मोबाईल फोन पर बात करते हुए एक कार-चालक महिला की कार को टक्कर मार दी थी जिसमें उसकी 3 साल की बेटी की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी थी और वह महिला कोमा में चली गयी थी. अब एक महत्वपूर्ण निर्णय उस परिवार को ये लेना था कि उस महिला को जीवन-रक्षक मशीन पर बनाए रखना है अथवा नहीं? क्योंकि वह कोमा से बाहर आकर, स्वस्थ हो सकने की अवस्था में नहीं थी. क्या वह परिवार इसी छोटे-लड़के का ही था? मेरा मन रोम-रोम काँप उठा . मेरी उस नन्हे लड़के के साथ हुई मुलाक़ात के 2 दिनों बाद मैंने अखबार में पढ़ा कि उस महिला को बचाया नहीं जा सका. मैं अपने आप को रोक नहीं सका, और अखबार में दिए पते पर जा पहुँचा जहाँ उस महिला को अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था. वह महिला श्वेत धवल कपड़ों में थी - अपने हाथ में एक सफ़ेद गुलाब और उस छोटे-से लड़के का वह फोटो लिए हुए और उसके सीने पर रखी हुई थी - वही गुड़िया मेरी आँखे नम हो गयी, मैं नम आँखें लेकर वहाँ से लौटा उस नन्हे-से लड़के का अपनी माँ और उसकी बहन के लिए जो प्यार था वह शब्दों में बयान करना मुश्किल है और ऐसे में, एक शराबी चालक ने अपनी घोर लापरवाही से, क्षण-भर में उस लड़के से उसका सब कुछ छीन लिया था.

इस कहानी से, सिर्फ और सिर्फ एक पैग़ाम देना चाहता हूँ : कृपया - कभी भी शराब पीकर और मोबाइल पर बात करते समय वाहन ना चलायें.

******

पथ ए मंज़िल

लक्ष्मण कुमार
तक:- 1/वसेइंजी/सवमाडि/बीदर

मैं लता इस तरु तृण का
लिपटा शायद
इन वृक्षों पर
जिन्हें
आखिर मिल ही जाता है
अपने मंजिल का रास्ता

राह पूछो
उस तरु तृण से
इस मंजिल का
तो वह बोलेगा
आसान नहीं पथ ए मंज़िल
परन्तु
वह तो सामने है
तू देख अपने सामने
हां वह तेरे दाएं बाएं भी तो नहीं
झांकने को बोलेगा
सामने ही ।

*****

सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां

महाप्रबंधक/द.म.रे का मंडल रेल प्रबंधकों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ रियर विंडो निरीक्षण:

श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे ने दिनांक 26.07.25 को सिकंदराबाद और हैदराबाद के मंडल रेल प्रबंधकों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सिकंदराबाद - सीताफलमंडी - मलकाजगिरी-मौला-अली-अम्मुगुडा - सनतनगर सेक्शनों और भुवनगिरी तक का व्यापक रियर विंडो निरीक्षण किया, ताकि संरक्षा पहलुओं और परिचालन दक्षता की समीक्षा की जा सके.

सिकंदराबाद मंडल में जीएचएमसी अधिकारियों के साथ संयुक्त समन्वय बैठक:

30 जुलाई, 2025 को दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल कार्यालय के संचालन भवन में एक संयुक्त बैठक आयोजित की गई. बैठक में सिकंदराबाद के मंडल रेल प्रबंधक डॉ. आर. गोपालकृष्णन; ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम (जीएचएमसी) के आयुक्त श्री आर.वी. कर्णन, हैदराबाद और सिकंदराबाद मंडलों के अपर मंडल रेल प्रबंधक; और अन्य अधिकारी उपस्थित थे.

भाषा की सरलता, सहजता और अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है.

- नरेन्द्र मोदी,

मंडल रेल प्रबंधक / सिकंदराबाद द्वारा विजयवाडा-सिकंदराबाद सेक्शन के निरीक्षण के दौरान विजयवाडा कर्मीदल लॉबी में लोको पायलटों और सहायक लोको पायलटों के साथ बातचीत करते हुए.

लोको कर्मीदल को सुरक्षा उपायों, हाल के एसपीएडी मामलों, अंडर-गियर जांच, परिहार्य लोको खराबियों और आराम व सतर्कता के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए सभी कर्मीदल लॉबी में 75 सुरक्षा सेमिनार आयोजित किए गए. विजयवाडा-सिकंदराबाद सेक्शन के निरीक्षण के दौरान, मंरेप्र/सिकंदराबाद ने विजयवाडा कर्मीदल लॉबी में लोको पायलटों और सहायक लोको पायलटों के साथ बातचीत की, फीडबैक लिया और सुरक्षा नियमों के अनुपालन पर ज़ोर दिया.

स्वच्छ भारत अभियान स्वच्छता अभियान

सिकंदराबाद मंडल के द्वारा 1 अगस्त से 15 अगस्त 2025 तक **"स्वच्छ भारत अभियान"** मनाया. दिनांक. 01.08.2025 को संचालन भवन में अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलाई गई, जिसमें स्वच्छ और स्वस्थ भारत के लिए समर्पित स्वच्छ भारत मिशन के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई.

मंडल के सभी स्टेशनों पर स्वच्छता शपथ, स्टेशन सफाई अभियान, यात्री जागरूकता शिविर, रैलियां, नुक्कड़ नाटक, श्रमदान और पौधा रोपण आदि सहित विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं. इसके अंतर्गत मंडल भर में कुल 793 कार्यक्रम आयोजित किए गए.

स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपना लो कि वह आपकी आदत बन जाए.

- महात्मा गांधी

बैटरी स्वैपिंग स्टेशन का उद्घाटन

प्रदूषण मुक्त भविष्य के लिए गो-ग्रीन और ग्रीन इंडिया पहल के अंतर्गत, डॉ. आर. गोपालकृष्णन, मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद ने वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक एवं अन्य अधिकारियों के साथ संजीवैया पार्क एमएमटीएस स्टेशन पर एक बैटरी स्वैपिंग स्टेशन का उद्घाटन किया. इस कार्यक्रम में दक्षिण मध्य रेलवे के सहयोग से इंडोफास्ट एनर्जी के सीईओ श्री अनंत बडजात्या भी उपस्थित थे.

स्वतंत्रता दिवस समारोह के भाग के रूप में तिरंगा यात्रा

डॉ.आर.गोपालकृष्णन, मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद, अपर मंडल रेल प्रबंधक/इंफ्रा, शाखा अधिकारियों एवं संचालन भवन के कर्मचारियों ने स्वतंत्रता दिवस समारोह के हिस्से के रूप में तिरंगा यात्रा में भाग लिया, जिसमें आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एकता और देशभक्ति का प्रदर्शन किया गया.

हर घर तिरंगा

तीन रंग का नहीं वस्त्र
ये ध्वज देश की शान हैं,
हर भारतीय के दिल का यही तो स्वाभिमान हैं।
यही गंगा, यही हिमालय यही हिंद की जान है,
तीन रंगों में रंगा हुआ ये अपना हिंदुस्तान हैं।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

सिकंदराबाद मंडल ने 15 अगस्त, 2025 को रेलवे ऑफिसर्स क्लब में 79वां स्वतंत्रता दिवस उत्साह और राष्ट्रीय भावना के साथ मनाया. मंडल रेल प्रबंधक डॉ. आर. गोपालकृष्णन ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और रेलवे सुरक्षा बल, स्काउट्स एवं गाइड्स की विभिन्न टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत गार्ड ऑफ ऑनर प्राप्त किया. इस अवसर पर कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए.

राजभाषा:- सरकारी कामकाज में उपयोग की जाने वाली भाषा अर्थात् राजकाज की भाषा को राजभाषा कहते हैं. देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा है.

राष्ट्रभाषा:- किसी भी देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं, हिंदी भारत ही राष्ट्रभाषा है. कोई भी भाषा अपने महत्व के कारण किसी राष्ट्र के विस्तृत भू-भाग द्वारा अपना ली जाती है तो वह भाषा स्वत: ही उस राष्ट्र की राष्ट्र भाषा बन जाती है.

राजभाषा विभाग, सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित गतिविधियां

दि. 18.06.2025 को स्वास्थ्य यूनिट, चिलकलगुडा में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक एवं तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन

दि. 23.06.2025 को सभा भवन, संचालन भवन में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

दि. 30.06.2025 को वरंगल स्टेशन में राजभाषा कार्यान्वयन उपसमिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 09.07.2025 को सिकंदराबाद स्टेशन में राजभाषा कार्यान्वयन उपसमिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 22.07.2025 को कोचिंग डिपो, हैदराबाद में राजभाषा कार्यान्वयन उपसमिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 29.07.2025 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में प्रेम चंद जयंती का आयोजन

दिनांक 05.08.2025 को सिरपुरकागजनगर स्टेशन में राजभाषा कार्यान्वयन उपसमिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 06.08.2025 को कोचिंग डिपो, सिकंदराबाद में राजभाषा कार्यान्वयन उपसमिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 07.08.2025 सिकंदराबाद मंडल में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन. वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा स्टेशनों का निरीक्षण

दिनांक 30.06.2025 को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, सिकंदराबाद के द्वारा वरंगल स्टेशन एवं स्टेशन अधीक्षक कार्यालय का निरीक्षण करते हुए.

दिनांक 05.08.2025 को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, सिकंदराबाद के द्वारा सिरपुरकागजनगर स्टेशन एवं हिंदी पुस्तकालय का का निरीक्षण करते हुए.

दिनांक 06.08.2025 को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, सिकंदराबाद के द्वारा कोचिंग डिपो सिकंदराबाद का निरीक्षण एवं राजभाषा से संबंधित कार्यों की समीक्षा करते हुए.

मंडल कार्योलय एवं स्टेशनों पर कर्मचारियों को कुंजीयन प्रशिक्षण देते हुए.

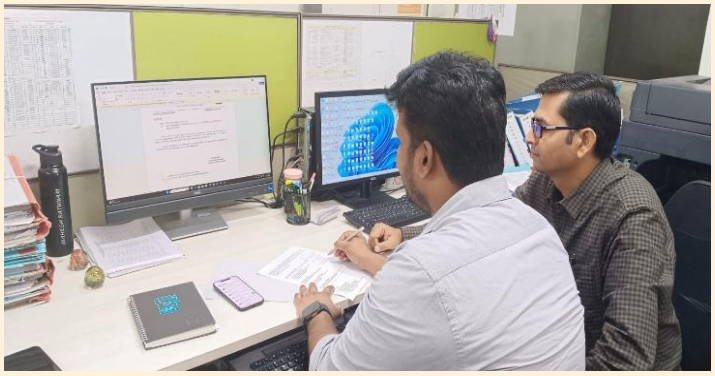

राजभाषा नियम

संविधान की अष्टम अनुसूची के अनुसार भारत की कुल 22 भाषाएं हैं.

देवनागरी अंक, रोमन अंक एवं भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के कुछ निम्नलिखिति उदाहरण दिए गए हैं.

- **रोमन अंकों में शून्य नहीं होता है.**
- **शून्य का अविष्कार भारत में हुआ था.**

हिंदी			देवनागरी अंक	रोमन अंक	भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप
असमिया	उड़िया	उर्दू	१	I	1
कन्नड़	कश्मीरी	गुजराती	२	II	2
तमिल	तेलुगु	पंजाबी	३	III	3
बंगला	मराठी	मलयालम	४	IV	4
संस्कृत	सिंधी	मणिपुरी	५	V	5
नेपाली	कोंकणी	मैथिली	६	VI	6
			७	VII	7
संथाली	बोडो	डोंगरी	८	VIII	8
			९	IX	9
			१०	X	10

हिंदी उन सभी गुणों ले अलंकृत है.जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है ,

:- मैथिलिशरण गुप्त

"यह समाचार पत्रिका सिकंदराबाद मंडल की गतिविधियों को राजभाषा में साझा करने हेतु प्रकाशित की जा रही है".